उत्तराखंड/उत्तर प्रदेश का प्रथम द्विभाषीय (हिन्दी-अंग्रेजी) सांध्य दैनिक समाचार पत्र

जनमत टुडे

3 विदा गीतः तो नाइट वाच मैन की भूमिका में उतरे थे तीरथ

वर्षः12 | अंकः186 | देहरादून, शनिवार, 03 जुलाई, 2021 | पृष्ठः08 | मूल्यः2/-

कम पानी में भी धान की अधिक पैदावारः डॉ. संजीव कुमार

दीपक गौड़ (जनमत टुडे)

कानपुरः चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर के सस्य विज्ञान विभाग के प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष डॉ संजीव कुमार ने बताया कि अब किसान कम पानी में भी धान की अधिक पैदावार कर सकेंगे उन्होंने बताया कि उनके निर्देशन में पिछले 2 वर्षों से शोध कार्य कर रहे शोध छात्र रामनरेश ने धान की फसल में दो सिंचाई पद्धति 1. बाढ़ सिंचाई 2.वैकल्पिक गीला एवं सुखाने वाली सिंचाई पर परीक्षण किए हैं डॉ कुमार ने बताया कि शोधों द्वारा पाया गया है कि वैकल्पिक गीला एवं सुखाने वाली सिंचाई पद्धति से एक पानी की बचत हो जाती है। उन्होंने बताया कि नई तकनीक से धान की फसल के लिए पानी की आवश्यकता में 40 से 50

फीसदी तक कम करने में मदद मिलेगी शोधों द्वारा ज्ञात हुआ है कि धान के खेत में स्थिर पानी की जरूरत नहीं होती है उन्होंने कहा कि अच्छे प्रबंधन से 4– 5 टन धान प्रति हेक्टेयर उत्पादन हो सकता है।

उन्होंने कहा कि बाढ़ सिंचाई पद्धति में 1 किलोग्राम धान उत्पादन में सामान्यता 4000 से 5000 लीटर पानी की आवश्यकता होती है उन्होंने बताया कि धान की खेती में पानी का इस्तेमाल अगर वैश्विक स्तर पर 10 फीसदी कम कर दिया जाए तो गैर कृषि जरूरतों के लिए 150 अरब क्यूबिक मीटर पानी उपलब्ध हो सकता है डॉ कुमार ने बताया कि नई सिंचाई पद्धति में गीला एवं सुखाने वाली सिंचाई से आर्सेनिक, सीसा और कैडमियम के स्तर को क्रमशरू 66,73 और 33ः कम कर सकता है। उन्होंने बताया कि इस विधि से रोग एवं कीटों का प्रकोप कम होता है क्योंकि बीच–बीच में मृदा सूखती है जिससे मृदा जनित रोगाणु नष्ट हो जाते हैं इस विधि द्वारा मीथेन उत्सर्जन को 85ः कम पाया गया। साथ ही पंपिंग लागत एवं ईंधन पर होने वाले व्यय में कमी आई है उन्होंने कहा कि यह विधि किसानों के लिए धान उत्पादन के क्षेत्र में जहां पर पानी की कमी है काफी लाभकारी जीत होगी।

04 july_jan express.pdf

जन एक्सप्रेस

janexpresslive

लखनऊ, रविवार, 04 जुलाई, 2021, वर्ष : 12, अंक : 260, पृष्ठ : 12, मूल्य ₹ 3.00/-

www.janexpresslive.com/epaper

कम पानी में भी धान की पैदावार करने के किसानों को बताए तरीके

जन एक्सप्रेस संवाददाता

कानपुर नगर। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय के सस्य विज्ञान विभाग के प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष डॉ. संजीव कुमार ने किसानों को कम पानी में भी धान की पैदावार करने के तरीके के बारे में बताते हुए कहा कि उनके निर्देशन में पिछले 2 वर्षों से शोध कार्य कर रहे शोध छात्र रामनरेश ने धान की फसल में दो सिंचाई पद्धति बाढ़ सिंचाई तथा वैकल्पिक गीला एवं सुखाने वाली सिंचाई पर परीक्षण किए हैं जिनके आधार में यह पाया गया है कि वैकल्पिक गीला एवं सुखाने वाली सिंचाई पद्धति से एक पानी की बचत होती है। उन्होंने बताया कि नई तकनीक से धान की फसल के लिए पानी की आवश्यकता में 40 से 50 फीसदी तक कमी की जा सकती है। डॉ कुमार ने कहा कि शोधों से पता चला है कि धान के खेत में स्थिर पानी की जरूरत नहीं होती है बल्कि अच्छे प्रबंधन से 4- 5 टन धान का प्रति हेक्टेयर उत्पादन किया जा सकता है। उन्होंने बताया कि बाढ़ सिंचाई पद्धति में 1 किलोग्राम धान उत्पादन में सामान्यता 4000 से 5000 लीटर पानी की आवश्यकता होती है वही धान की खेती में पानी का इस्तेमाल अगर वैश्विक स्तर पर 10 फीसदी कम कर दिया जाए तो गैर कृषि जरूरतों के लिए 150 अरब क्यूबिक मीटर पानी उपलब्ध हो सकता है। नई सिंचाई पद्धति में गीला एवं सुखाने वाली सिंचाई से आर्सेनिक, सीसा और कैडमियम के स्तर को क्रमशः 66,73 और 33 फीसदी तक कम कर सकता है। इस विधि से रोग एवं कीटों का प्रकोप कम होता है क्योंकि बीच-बीच में मिट्टी सूखती है और मिट्टी जनित रोगाणु नष्ट हो जाते हैं। उन्होंने बताया कि इस विधि द्वारा मीथेन उत्सर्जन को 85 फीसदी कम पाया गया साथ ही पंपिंग लागत एवं ईंधन पर होने वाले व्यय में कमी आई है। उन्होंने कहा कि ऐसे धान उत्पादन के क्षेत्र जहां पानी की कमी है यह विधि लाभकारी होगी।

04 July 2021 satta express.pdf

आर.एन.आई.नं.- UPHIN/2009/44666

राष्ट्रीय हिन्दी दैनिक

सत्ता एक्सप्रेस

डी.ए.वी.पी. नई दिल्ली एवं राज्य सरकार द्वारा विज्ञापन मान्यता प्राप्त

वर्ष: 12 अंक : 260 कानपुर देहात, रविवार 04 जुलाई 2021 Email: sattaexpress@rediffmail.com पृष्ठ : 4 मूल्य : एक रुपया

सत्ता एक्सप्रेस.....किसान कोना कम पानी में भी धान की अधिक पैदावाररु- डॉ संजीव कुमार

चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर के सस्य विज्ञान विभाग के प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष डॉ संजीव कुमार ने सत्ता एक्सप्रेस से वार्ता कर किसानों को सलाह दी है कि अब आप लोग कम पानी में भी धान की अधिक पैदावार कर सकते हैं। उन्होंने बताया कि उनके निर्देशन में पिछले 2 वर्षों से शोध कार्य कर रहे शोध छात्र रामनरेश ने धान की फसल में दो सिंचाई पद्धति 1. बाढ़ सिंचाई 2.वैकल्पिक गीला एवं सुखाने वाली सिंचाई पर परीक्षण किए हैं डॉ कुमार ने बताया कि शोधों द्वारा पाया गया है कि वैकल्पिक गीला एवं सुखाने वाली सिंचाई पद्धति से एक पानी की बचत हो जाती है। उन्होंने बताया कि नई तकनीक से धान की फसल के लिए पानी की आवश्यकता में 40 से 50 फीसदी तक कम करने में मदद मिलेगी। शोधों द्वारा ज्ञात हुआ है कि धान के खेत में स्थिर पानी की जरूरत नहीं होती है। उन्होंने कहा कि अच्छे प्रबंधन से 4– 5 टन धान प्रति हेक्टेयर उत्पादन हो सकता है। उन्होंने कहा कि बाढ़ सिंचाई पद्धति में 1 किलोग्राम धान उत्पादन में सामान्यता 4000 से 5000 लीटर पानी की आवश्यकता होती है। उन्होंने बताया कि धान की खेती में पानी का इस्तेमाल अगर वैश्विक स्तर पर 10 फीसदी कम कर दिया जाए तो गैर कृषि जरूरतों के लिए 150 अरब क्यूबिक मीटर पानी उपलब्ध हो सकता है। डॉ कुमार ने बताया कि नई सिंचाई पद्धति में गीला एवं सुखाने वाली सिंचाई से आर्सेनिक, सीसा और कैडमियम के स्तर को क्रमशरू 66,73 और 33: कम कर सकता है। उन्होंने बताया कि इस विधि से रोग एवं कीटों का प्रकोप कम होता है क्योंकि बीच–बीच में मृदा सूखती है जिससे मृदा जनित रोगाणु नष्ट हो जाते हैं।इस विधि द्वारा मीथेन उत्सर्जन को 85: कम पाया गया साथ ही पंपिंग लागत एवं ईंधन पर होने वाले व्यय में कमी आई है। उन्होंने कहा कि यह विधि किसानों के लिए धान उत्पादन के क्षेत्र में जहां पर पानी की कमी है काफी लाभकारी जीत होगी।

हिन्दी दैनिक

R.N.I.;UPHIN/2012/42725

हिन्दुस्तान का इतिहास

कानपुर से प्रकाशित

वर्ष : 10 अंक : 63 हिन्दी दैनिक | कानपुर रविवार,04 जुलाई ,2021 | पृष्ठ : 8 | मूल्य : 2 रुपये

कम पानी में भी धान की अधिक पैदावारः- डॉ संजीव कुमार

कानपुर– हिन्दुस्तान का इतिहास–– चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर के सस्य विज्ञान विभाग के प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष डॉ संजीव कुमार ने बताया कि अब किसान कम पानी में भी धान की अधिक पैदावार कर सकेंगे उन्होंने बताया कि उनके निर्देशन में पिछले 2 वर्षों से शोध कार्य कर रहे शोध छात्र रामनरेश ने धान की फसल में दो सिंचाई पद्धति 1. बाढ़ सिंचाई 2.वैकल्पिक गीला पानी की आवश्यकता होती है उन्होंने बताया कि धान की खेती में पानी का इस्तेमाल अगर वैश्विक स्तर पर 10 फीसदी कम कर दिया जाए तो गैर कृषि जरूरतों के लिए 150 अरब

एवं सुखाने वाली सिंचाई पर परीक्षण किए हैं डॉ कुमार ने बताया कि शोधों द्वारा पाया गया है कि वैकल्पिक गीला एवं सुखाने वाली सिंचाई पद्धति से एक पानी की बचत हो जाती है। उन्होंने बताया कि नई तकनीक से धान की फसल के लिए पानी की आवश्यकता में 40 से 50 फीसदी तक कम करने में मदद मिलेगी शोधों द्वारा ज्ञात हुआ है कि धान के खेत में स्थिर पानी की जरूरत नहीं होती है उन्होंने कहा कि अच्छे प्रबंधन से 4– 5 टन धान प्रति हेक्टेयर उत्पादन हो सकता है। उन्होंने कहा कि बाढ़ सिंचाई पद्धति में 1 किलोग्राम धान उत्पादन में सामान्यता 4000 से 5000 लीटर क्यूबिक मीटर पानी उपलब्ध हो सकता है डॉ कुमार ने बताया कि नई सिंचाई पद्धति में गीला एवं सुखाने वाली सिंचाई से आर्सेनिक, सीसा और कैडमियम के स्तर को क्रमशरू 66,73 और 33ः कम कर सकता है उन्होंने बताया कि इस विधि से रोग एवं कीटों का प्रकोप कम होता है क्योंकि बीच–बीच में मृदा सूखती है जिससे मृदा जनित रोगाणु नष्ट हो जाते हैं इस विधि द्वारा मीथेन उत्सर्जन को 85ः कम पाया गया साथ ही पंपिंग लागत एवं ईंधन पर होने वाले व्यय में कमी आई है उन्होंने कहा कि यह विधि किसानों के लिए धान उत्पादन के क्षेत्र में जहां पर पानी की कमी है काफी लाभकारी जीत होगी

पंचायत अध्यक्ष

इस दौरान उत्तर प्रदेश सरकार के राज्य मंत्री सुरेश पासी, अमेठी सांसद केंद्रीय मंत्री भारत सरकार स्मृति जुबिन ईरानी के सचिव विजय गुप्ता, भाजपा जिला अध्यक्ष दुर्गेश त्रिपाठी, अमेठी विधायक गरिमा सिंह के पुत्र अनंत विक्रम सिंह, जिला उपाध्यक्ष गिरीश चंद्र शुक्ला, व्यापार प्रकोष्ठ संयोजक पंडित राम उंजेरे शुक्ला, जिला प्रवक्ता चंद्रमोली सिंह, जिला कार्यसमिति सदस्य दीपचंद कौशल, जिला महामंत्री व्यापार मंडल सियाराम वैश्य, जिला पंचायत सदस्य सोनू यज्ञ सैनी,आईटी सेल जिला संयोजक प्रशांत शुक्ला, मंडल अध्यक्ष शंकर बक्स सिंह, प्रमुख प्रत्याशी भूपेंद्र विक्रम सिंह सोनू सिंह, प्रधान रमेश शुक्ला, गौरव शिवराज सिंह, हिंदेश सिंह, सहित पूरे जनपद के सभी राजनीतिक हस्तियां एवं भाजपा पदाधिकारी कार्यकर्ता मौजूद रहे ।

हिन्दुस्तान • कानपुर • रविवार • 04 जुलाई 2021 • 08

कम पानी में भी कर सकते धान की खेती

कानपुर। सीएसए के सस्य विज्ञान विभाग के प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष डॉ. संजीव कुमार ने दावा किया कि अब किसान नई तकनीक का उपयोग कर 40 से 50 फीसदी कम पानी में भी धान की खेती कर सकते हैं। डॉ. कुमार ने बताया कि उनके निर्देशन में शोध छात्र रामनरेश ने धान की फसल में दो तरह की तकनीक पर परीक्षण किए। इसमें पाया गया कि वैकल्पिक गीला एवं सुखाने वाली सिंचाई पद्धति से एक पानी की बचत हो जाती है। शोध से पता चला है कि धान के खेत में स्थिर पानी की जरूरत नहीं होती है।

कम पानी में भी धान की अधिक पैदावार : डॉ. संजीव

04/07/2021 राष्ट्रीय स्वरूप

आज
कानपुर
4 जुलाई 2021 4

नई तकनीक से धान की फसल के लिए कम होगी पानी की आवश्यकता

❑ कम पानी में भी धान की अधिक पैदावार-वैज्ञानिक डॉ. संजीव कुमार

(आज समाचार सेवा)

कानपुर, 3 जुलाई। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर के सस्य विज्ञान विभाग के प्रो एवं विभागाध्यक्ष डॉ संजीव कुमार ने बताया कि अब किसान कम पानी में भी धान की अधिक पैदावार कर सकेंगे। उन्होंने बताया कि पिछले 2 वर्षों से शोध कार्य कर रहे शोध छात्र रामनरेश ने धान की फसल में दो सिंचाई पद्धति 1, बाढ़ सिंचाई 2, वैकल्पिक गीला एवं सुखाने वाली सिंचाई पर परीक्षण किए हैं। डॉ कुमार ने बताया कि शोधों द्वारा पाया गया है कि वैकल्पिक गीला एवं सुखाने वाली सिंचाई पद्धति से एक पानी की बचत हो जाती है। उन्होंने बताया कि नई तकनीक से धान की फसल के लिए पानी की आवश्यकता में 40 से 50 फ़ीसदी तक कम करने में मदद मिलेगी।

शोधों द्वारा ज्ञात हुआ है कि धान के खेत में स्थिर पानी की जरूरत नहीं होती है। उन्होंने कहा कि अच्छे प्रबंधन से 4- 5 टन धान प्रति हेक्टेयर उत्पादन हो सकता है। उन्होंने कहा कि बाढ़ सिंचाई पद्धति में 1 किलोग्राम धान उत्पादन में सामान्यता 4000 से 5000 लीटर पानी की आवश्यकता होती है। उन्होंने बताया कि धान की खेती में पानी का इस्तेमाल अगर वैश्विक स्तर पर 10 फ़ीसदी कम कर दिया जाए तो गैर कृषि जरूरतों के लिए 150 अरब क्यूबिक मीटर पानी उपलब्ध हो सकता है। डॉ कुमार ने बताया कि नई सिंचाई पद्धति में गीला एवं सुखाने वाली सिंचाई से आर्सेनिक, सीसा और कैडमियम के स्तर को क्रमशः 66,73 और 33 प्रतिशथ कम कर सकता है। उन्होंने बताया कि इस विधि से रोग एवं कीटों का प्रकोप कम होता है क्योंकि बीच-बीच में मृदा सूखती है जिससे मृदा जनित रोगाणु नष्ट हो जाते हैं। इस विधि द्वारा मीथेन उत्सर्जन को 85 प्रतिशत कम पाया गया साथ ही पंपिंग लागत एवं ईंधन पर होने वाले व्यय में कमी आई है। उन्होंने कहा कि यह विधि किसानों के लिए धान उत्पादन के क्षेत्र में जहां पर पानी की कमी है काफी लाभकारी जीत होगी।

www.facebook.com/worldkhabarexpress www.twitter.com/worldkhabarexpress www.youtube.com/worldkhabarexpress
WORLD खबर EXPRESS
WORLD ख़बर एक्सप्रेस
03 जुलाई 2021, शनिवार www.worldkhabarexpress.media MID DAY E-PAPER www.worldkhabarexpr

कम पानी में भी करें धान की अधिक पैदावारः डॉ. संजीव कुमार

कानपुर। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय के सस्य विज्ञान विभाग के प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष डॉ. संजीव कुमार ने बताया कि अब किसान कम पानी में भी धान की अधिक पैदावार कर सकेंगे। उनके निर्देशन में पिछले दो वर्षों से शोध कार्य कर रहे छात्र रामनरेश ने धान की फसल में दो सिंचाई पद्धति बाढ़ सिंचाई और वैकल्पिक गीला एवं सुखाने वाली सिंचाई पर परीक्षण किए हैं।

डॉ. कुमार ने बताया कि शोधों में पाया गया कि वैकल्पिक गीला एवं सुखाने वाली सिंचाई पद्धति से एक पानी की बचत हो जाती है। उन्होंने बताया कि नई तकनीक से धान की फसल के लिए पानी की आवश्यकता में 40 से 50 फीसदी तक कम करने में मदद मिलेगी। शोधों से ज्ञात हुआ है कि धान के खेत में स्थिर पानी की जरूरत नहीं होती है। उन्होंने कहा कि अच्छे प्रबंधन से 4- 5 टन धान प्रति हेक्टेयर उत्पादन हो सकता है। बाढ़ सिंचाई पद्धति में 1 किलोग्राम धान उत्पादन में सामान्यता 4000 से 5000 लीटर पानी की आवश्यकता होती है। धान की खेती में पानी का इस्तेमाल अगर वैश्विक स्तर पर 10 फीसदी कम कर दिया जाए तो गैर कृषि जरूरतों के लिए 150 अरब क्यूबिक मीटर पानी उपलब्ध हो सकता है। डॉ. कुमार ने बताया कि नई सिंचाई पद्धति में गीला एवं सुखाने वाली सिंचाई से आर्सेनिक, सीसा और कैडमियम के स्तर को 66,73 और 33 फीसदी कम कर सकता है। उन्होंने बताया कि इस विधि से रोग और कीटों का प्रकोप कम होता है क्योंकि बीच-बीच में मृदा सूखती है जिससे मृदा जनित रोगाणु नष्ट हो जाते हैं। इस विधि में मीथेन उत्सर्जन को 85 फीसदी कम पाया गया। साथ ही पंपिंग लागत और ईंधन पर होने वाले व्यय में कमी आई है। उन्होंने कहा कि यह विधि किसानों के लिए धान उत्पादन के क्षेत्र में जहां पर पानी की कमी है, काफी लाभकारी जीत होगी।

अब कम पानी में भी धान की अधिक पैदावार

कानपुर (एसएनबी)। अब किसान कम पानी में भी धान की अधिक पैदावार कर सकेंगे। सीएसए कृषि एवं प्रौद्योगिकी विवि के वैज्ञानिकों द्वारा किये गये शोध से स्पष्ट हुआ है कि नई तकनीक से धान की फसल के लिए पानी की आवश्यकता 40 से 50 फीसद तक कम करने में मदद मिलेगी। शोध से ज्ञात हुआ है कि धान के खेत में स्थिर पानी की जरूरत नहीं होती है। अच्छे प्रबंधन से 4-5 टन धान प्रति हेक्टेयर उत्पादन हो सकता है।

कम पानी में खड़ी धान की फसल। फोटो : एसएनबी

सीएसए में शोधार्थी ने विकसित की धान के लिए वैकल्पिक गीला एवं सुखाने वाली सिंचाई पद्धति

धान के लिए पानी की आवश्यकता 40-50 फीसद तक की जा सकती है कम

विवि के सस्य विज्ञान विभाग के प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष डॉ.संजीव कुमार ने बताया कि उनके निर्देशन में पिछले दो वर्ष से शोध कार्य कर रहे शोध छात्र राम नरेश ने धान की फसल में दो सिंचाई पद्धति, एक-बाढ़ सिंचाई व दूसरा-वैकल्पिक गीला एवं सुखाने वाली सिंचाई पर परीक्षण किये हैं। शोध में पाया गया कि वैकल्पिक गीला एवं सुखाने वाली सिंचाई पद्धति से एक पानी की बचत हो जाती है। बाढ़ सिंचाई पद्धति में 1 किग्रा धान उत्पादन में सामान्यतया 4 से 5 हजार लीटर पानी की आवश्यकता होती है।

डॉ. संजीव ने बताया कि धान की खेती में पानी का इस्तेमाल अगर वैश्विक स्तर पर 10 फीसद कम कर दिया जाय तो गैर कृषि जरूरतों के लिए 150 अरब क्यूबिक मीटर पानी उपलब्ध हो सकता है। उन्होंने कहा कि नई सिंचाई पद्धति में गीला एवं सुखाने वाली सिंचाई से आर्सेनिक, सीसा और कैडमियम के स्तर को क्रमशः 66, 73 और 33 प्रतिशत कम कर सकता है। उन्होंने दावा किया कि इस विधि से रोग एवं कीटों का प्रकोप कम होता है, क्योंकि बीच-बीच में मृदा सूखती रहती है, जिससे मृदा जनित रोगाणु नष्ट हो जाते हैं।

इस विधि में मीथेन उत्सर्जन को 85 प्रतिशत तक कम पाया गया। साथ ही पंपिंग लागत एवं ईंधन पर होने वाले व्यय में कमी आई है। उन्होंने कहा कि यह विधि किसानों के लिए धान उत्पादन क्षेत्र में जहां पानी की कमी है, काफी लाभकारी हो सकती है।

अमर उजाला

रविवार • 04.07.2021 05

kanpur.amarujala.com

न्यूज डायरी

सब्जियों की संरक्षित खेती करना सीखेंगे किसान

कानपुर। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय किसानों को सब्जियों की संरक्षित खेती के माध्यम से उद्यमिता विकास करना सिखाएगा। किसानों और युवाओं को मूल्य संवर्धन कर सब्जियों की गुणवत्ता बढ़ाने के टिप्स दिए जाएंगे। छह और सात जुलाई को सीएसए की ओर से आयोजित होने वाले वेबिनार में भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान के वैज्ञानिक किसानों को टिप्स देंगे। आईसीएआर के पूर्व कुलपति डॉ. बलराज सिंह, आईसीएआर दिल्ली के डॉ. प्रभात कुमार, राजीव कुमार सिंह, आईसीएआर के प्रिंसिपल साइंटिस्ट डॉ. राजेश कुमार आदि व्याख्यान देंगे। (संवाद)